



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों में ब्रह्म समाज व आर्य समाज की भूमिका

पंकज कुमार मीणा

सहायक आचार्य इतिहास (विद्या संबल योजना)

राजकीय कन्या महाविद्यालय

नारायणपुर, कोटपूतली बहरोड (राजस्थान)

भोधा सारांश

भारत में समय-समय पर अनेकानेक समाज-सुधारक हुए तथा उन्होंने समाज में प्रचलित कुरीतियों को दूर करने के लिए भरसक प्रयत्न किये। भारत के नवीन समाज-सुधार आन्दोलनों एवं प्राचीन आन्दोलनों में बड़ा अन्तर है। कबीर, रामानुज आदि के आन्दोलनों का भी मुख्य उद्देश्य समाज की कुरीतियों को निकाल फेंकना था परन्तु उनके आन्दोलन पूर्णतया स्वदेशी थे। लेकिन 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत में जो समाज-सुधारक हुए, उनमें से अधिकांश पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित थे तथा उसी आधार पर भारतीय समाज की पुनर्रचना करना चाहते थे। ब्रह्म समाज तथा राजा राममोहन राय के आन्दोलन पूर्णरूप से पश्चिमी सभ्यता से प्रेरणा प्राप्त किए हुए थे। लेकिन आर्य समाज एवं रामकृष्ण मिशन के आन्दोलन अपनी मूल भावना में स्वदेशी थे। इन समाज-सुधार के आन्दोलनों ने भारत के सामाजिक एवं धार्मिक पुनर्जागरण की नींव रखी तथा राष्ट्रीय आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त किया।

भाब्द कुजी :- राष्ट्रीय आन्दोलन, आर्य समाज, ब्रह्म समाज, धार्मिक सुधार, जातिप्रथा।

परिचय

भारत में 19वीं शताब्दी में जो प्रमुख सामाजिक और धार्मिक आंदोलन हुए, उनमें ब्रह्म समाज और आर्य समाज का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान था। ये दोनों आंदोलन भारतीय समाज को सुधारने, उसे धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से जागरूक बनाने, और यूरोपीय उपनिवेशवाद के बावजूद भारतीय संस्कृति और पहचान को बचाए रखने के प्रयास थे। ब्रह्म समाज और आर्य समाज ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद, अस्पृश्यता, महिला उत्पीड़न, और सामाजिक असमानता के खिलाफ संघर्ष

किया। इन आंदोलनों की प्रेरणा भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार की भावना से उत्पन्न हुई थी, जो आधुनिकता की ओर बढ़ने के लिए आवश्यक थी।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों में ब्रह्म समाज व आर्य समाज की भूमिका का अध्ययन करना है।

भाषा विधि व उपकरण

इस शोध पत्र से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं को एकत्रित करने के पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं के लेखों, समाचार पत्रों, शोध प्रबंधों, इंटरनेट आदि के माध्यम से द्वितीयक स्रोत सामग्री प्राप्त की गयी है।

ब्रह्म समाज

ब्रह्म समाज की स्थापना 20 अगस्त, 1828 को कलकत्ता में राजा राममोहन राय ने की थी। धार्मिक व सामाजिक सुधार उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य था। राजा राममोहन राय एके"वरवाद में वि"वास करते थे तथा सभी प्रकार के अंध-वि"वासों एवं धार्मिक कर्मकाण्डों के विरोधी थे। उन्होंने कट्टर हिन्दुओं और ईसाई धर्म प्रचारकों से अनेक क बार वाद-विवाद भी किया था। आजीवन अपने विचारों का समर्थन करते रहे और इन्हीं विचारों का प्रचार करने के उद्देश्य से उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की थी। राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे जिन्होंने भारतीय धर्म और समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया था। उनके समय में भारतीय समाज और धर्म की स्थिति अत्यन्त खराब थी। धर्म का स्थान कर्मकाण्डों और अंध-वि"वासों ने ले लिया था। हिन्दू समाज में अनेक कुरीतियों का प्रचलन था। ऐसे समय में ईसाई धर्म और पाश्चात्य सभ्यता ने हिन्दू धर्म और भारतीय सभ्यता पर आक्रमण किया। ऐसा लगने लगा कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूरी तरह लोप हो जाएगा। इस अवसर पर ब्रह्म समाज ने वेदों व उपनिषदों के आधार पर हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता को स्थापित करने, हिन्दू धर्म के वास्तविक स्वरूप का प्रचार करने और समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करके उसे शक्तिशाली बनाने कार्य प्रारम्भ किया।

बड़ा समाज ने भारतीय जीवन के सभी अंगों को प्रभावित किया था। धार्मिक क्षेत्र में ब्रह्म समाज ने वेदों और उपनिषदों का आधार लेकर एके"वरवाद तथा सभी धर्मों की सत्यता पर बल दिया था तथा मूर्ति-पूजा और व्यर्थ के कर्मकाण्डों की आलोचना की थी। यद्यपि यह कहा जाता है कि ब्रह्म समाज पर ईसाई धर्म का प्रभाव था, तथापि यह धारणा पूरी तरह सत्य नहीं है। इतना अवश्य है कि पाश्चात्य सभ्यता की तार्किक स्वतन्त्रता और खोज की भावना का ब्रह्म समाज पर अवश्य प्रभाव पड़ा था। वास्तव में ब्रह्म समाज पहली संस्था थी जिसने हिन्दू धर्म की प्राचीन रूढ़िवादी दीवारों पर आक्रमण करने का साहस किया जिसके फलस्वरूप हिन्दू धर्म को नवजीवन प्राप्त हुआ और अन्य धर्म सुधारकों को भी प्रोत्साहन मिला।

ब्रह्म समाज के मुख्य सिद्धांत

- एके"वरवाद
- सती प्रथा का विरोध
- महिलाओं के अधिकारों की वकालत

● शिक्षा का प्रसार

ब्रह्म समाज का दूसरा प्रमुख कार्य सामाजिक सुधार था। इस संस्था ने हिन्दू समाज में अचलित सभी कुरीतियों पर आक्रमण किया। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा, छुआछूत, नशा आदि सभी कुरीतियों का विरोध इस संस्था ने किया था। इसके अतिरिक्त स्त्री शिक्षा, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह आदि रचनात्मक कार्यों को भी प्रारम्भ किया गया। मनुष्य मात्र की सेवा को ही ब्रह्म समाज ईश्वर की सच्ची सेवा मानता था। राष्ट्रीयता की भावना के विकास में भी ब्रह्म समाज का महत्वपूर्ण योगदान था। भारत के प्राचीन गौरव का निर्माण और अपनी सभ्यता तथा धर्म में विवास राष्ट्रीयता के निर्माण में अत्यन्त सहायक था और इस दिशा में ब्रह्म समाज ने भी कार्य किया था।

ब्रह्म समाज ने समाज सुधार, धर्म सुधार और आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसने पहली बार भारतीय समाज की आवश्यकताओं और समस्याओं को भारतीयों के सम्मुख रखा तथा बौद्धिक जागृति की ओर एक सराहनीय कदम उठाया जिससे आगे आने वाले सुधारकों को सहायता मिली। ब्रह्म समाज द्वारा खड़ी की गई आधारशिला पर खड़े होकर रामकृष्ण मिशन और आर्य समाज ने साहस तथा आत्म विवास के साथ पाश्चात्य सभ्यता और धर्म से टक्कर ली तथा भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रमाणित किया।

ब्रह्म समाज की देन ब्रह्म समाज कोई राजनीतिक आन्दोलन नहीं था परन्तु उसका बुद्धिवाद (Rationalism), सार्वभौमिकता (Universalism), मानवता के। धर्म की कल्पना तथा पूर्व और पश्चिम के बीच समन्वय के आदर्श ने भविष्य में आने वाले राजनीतिक आन्दोलनों के लिए बौद्धिक आधारों को तैयार किया। इसके अतिरिक्त यह आन्दोलन हिन्दू रूढ़िवाद के विरुद्ध पश्चिम की उदार भावना से प्रेरित था। किन्तु हिन्दू समाज में ब्रह्म समाज की जड़ें अधिक गहरी नहीं जम सकीं। हिन्दुओं में एक मनोवैज्ञानिक भावना यह रही कि धार्मिक प्रचारक केवल ऋषि, मुनि तथा साधु ही बन सकते हैं। इस प्रकार ब्रह्म समाज के प्रवक्ता जैसे राजा राममोहन राय तथा केशवचन्द्र सेन आदि हिन्दुओं की भावनाओं को उस मात्रा में प्रभावित नहीं कर पाये जितनी मात्रा में दयानन्द, रामकृष्ण एवं विवेकानन्द कर पाये।

किन्तु ब्रह्म समाज ने भारत को कई उच्चकोटि के विद्वान एवं नेता दिए, जैसे विपिन चन्द्र पाल, सी. आर. दास, आनन्द मोहन बोस, जगदीश चन्द्र बोस, प्रतापचन्द्र मजूमदार, रवीन्द्रनाथ टैगोर, लार्ड एस. पी. सिन्हा, सरला देवी चौधरानी, रामानन्द चटर्जी आदि। स्वामी विवेकानन्द भी कुछ समय तक ब्रह्म समाज के सदस्य रहे।

आर्य समाज

ब्रह्म समाज एक रक्षात्मक आन्दोलन था। उसने वेदों और उपनिषदों से प्रेरणा प्राप्त की, किन्तु उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध करने का साहस नहीं किया। हिन्दू धर्म एवं समाज को एक उग्र और साहसी आन्दोलन की आवश्यकता थी और इस आवश्यकता की पूर्ति महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना के द्वारा की थी। इसकी स्थापना सन् 1875 में की गई। आर्य समाज ने धार्मिक क्षेत्र में मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड, बलि प्रथा, स्वर्ग-नरक की कल्पना तथा भाग्य में विवास का तीव्र विरोध किया। दयानन्द ने वेदों की सर्वोच्चता को स्थापित किया तथा उसी के आधार पर मन्त्र, हवन, पाठ, यज्ञ आदि पर बल दिया। आर्य समाज ने हिन्दू धर्म को सरल बनाया और उसकी श्रेष्ठता में विवास उत्पन्न किया। इस विवास तथा हिन्दू धर्म व वेदों की श्रेष्ठता के आधार को लेकर आर्य समाज ने हिन्दू धर्म को इस्लाम और ईसाई धर्म के आक्रमणों से बचाने में सफलता प्राप्त की।

सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज ने बाल-विवाह, बहु-विवाह, पर्दा प्रथा, जाति-प्रथा, सती प्रथा आदि समस्त कुरीतियों का विरोध किया। इसके अतिरिक्त उसने स्त्री-शिक्षा, सामाजिक समानता, जातिप्रथा उन्मूलन और अछूतों के लिए भी प्रयास किये, परन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य शुद्धि आन्दोलन था। आर्य समाज ने इस्लाम और ईसाई धर्म को छोड़कर आए हुए व्यक्तियों को हिन्दू धर्म में सम्मिलित करना प्रारम्भ कर दिया। शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ करके आर्य समाज ने अन्य धर्मावलम्बियों के लिए हिन्दू धर्म के द्वार खोल दिए और अनेक व्यक्तियों को हिन्दू बनाया।

आर्य समाज के मुख्य सिद्धांत

- वेदों की पुनःस्थापना
- एके"वरवाद
- सती प्रथा का विरोध
- महिलाओं के अधिकारों की वकालत

राजनीतिक जागरण के क्षेत्र में भी आर्य समाज का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण था। राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना दयानन्द के जीवन का मुख्य लक्ष्य था। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने श्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का आह्वान जनता से किया था। आर्य समाज ने अनेकों ऐसे व्यक्तियों के निर्माण में सहयोग दिया जो कट्टर हिन्दू धर्म की भावना से प्रेरित होकर भारतीय राष्ट्रीयता के समर्थक बन गए। इस प्रकार आर्य समाज ने हिन्दू धर्म और संस्कृति की श्रेष्ठता का दावा करके हिन्दू सम्मान व गौरव की रक्षा तथा हिन्दू जाति में आत्मवि"वास और स्वाभिमान को जन्म दिया। इसके फलस्वरूप भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माण में अत्यधिक सहायता मिली।

आर्य समाज का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान स्वामी दयानन्द वैदिक संस्कृति के महान् विद्वान् थे। उन्होंने राष्ट्रीयता की भावना को देश के अतीत गौरव की स्मृति दिलाकर जगाया। उन्होंने आत्म-सम्मान, राष्ट्र-प्रेम तथा भारत की प्राचीन संस्कृति के ऊपर गर्व करने की भावनाओं का प्रसार किया। आर्य समाज की स्वदेशी की भावना ही आगे चलकर राष्ट्रवाद का आधार बनी। आर्य समाज ने लाला लाजपतराय एवं स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महापुरुष राष्ट्रीय आन्दोलन को समर्पित किए।

आर्य समाज एकमात्र ऐसा संगठन है जिसके द्वारा धर्म, समाज, और राष्ट्र तीनों के लिए अभूतपूर्व कार्य किए गए हैं—

वेदों से परिचय— वेदों के संबंध में यह कहा जाता था कि वेद तो लुप्त हो गए, पाताल में चले गए। किन्तु महर्षि दयानन्द के प्रयास से पुनः वेदों का परिचय समाज को हुआ और आर्य समाज ने उसे देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी पहुँचाने का कार्य किया। आज अनेक देशों में वेदो ऋचाएँ गूँज रही हैं, हजारों विद्वान् आर्य समाज के माध्यम से विदेश गए और वे प्रचार कार्य कर रहे हैं। आर्य समाज कि यह समाज को अपने आप में एक बहुत बड़ी दे है।

सबको पढ़ने का अधिकार— वेद के संबंध में एक और प्रतिबंध था। वेद स्त्री और शूद्र को पढ़ने, सुनने का अधिकार नहीं था। किन्तु आज आर्य समाज के प्रयास से हजारों महिलाओं ने वेद पढ़कर ज्ञान प्रपट किया और वे वेद कि विद्वान् हैं। इसी प्रकार आज बिना किसी जाति भेद के कोई भी वेद पढ़ और सुन सकता है। यह आर्य समाज का ही देन है।

जातिवाद का अन्त— आर्य समाज जन्म से जाति को नहीं मानता। समस्त मानव एक ही जाति के हैं। गुण कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था को आर्य समाज मानता है। इसीलिए निम्न परिवारों में जन्म लेने

वाले अनेक व्यक्ति भी आज गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति शिक्षा के पश्चात आचार्य शास्त्री, पण्डित बनकर प्रचार कर रहे हैं।

स्त्री शिक्षा— स्त्री को शिक्षा का अधिकार नहीं है, ऐसी मान्यता प्रचलित थी। महर्षि दयानन्द ने इसका खण्डन किया और सबसे पहला कन्या विद्यालय आर्य समाज की ओर से प्रारम्भ किया गया। आज अनेक कन्या गुरुकुल आर्य समाज के द्वारा संचालित किए जा रहे हैं।

विधवा विवाह— महर्षि दयानन्द के पूर्व विधवा समाज के लिए एक अपशगून समझी जाती थी। सतीप्रथा इसी का एक कारण था। आर्य समाज ने इस कुरीति का विरोध किया तथा विधवा विवाह को मान्यता दिलवाने का प्रयास किया।

छुआछूत का विरोध— आर्य समाज ने सबसे पहले जातिगत ऊँचनीच के भेदभाव को तोड़ने की पहल की। इस आधार पर बाद में कानून बनाया गया। अछूतोंद्वारा के सम्बन्ध में आर्य सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसर काँग्रेस अधिवेशन में सबसे पहले यह प्रस्ताव रखा था जो पारित हुआ था।

देश की स्वतन्त्रता में योगदान— परतंत्र भारत को आजाद कराने में महर्षि दयानन्द को प्रथम पुरोधा कहा गया। सन् 1857 के समय से ही महर्षि ने अंग्रेज़ शासन के विरुद्ध जनजागरण प्रारम्भ कर दिया था। सन् 1870 में लाहौर में विदेशी कपड़ों की होली जलाई। स्टाम्प ड्यूटी व नमक के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा परिणाम स्वरूप आर्यसमाज के अनेक कार्यकर्ता व नेता स्वतन्त्रता संग्राम में देश को आजाद करवाने के लिए कूद पड़े।

निष्कर्ष

ब्रह्म समाज और आर्य समाज ने भारतीय समाज को सुधारने और उसे सशक्त बनाने की दिशा में अभूतपूर्व योगदान दिया। इन दोनों आंदोलनों ने न केवल हिन्दू धर्म में सुधार किया, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर भी प्रदान किया। इन आंदोलनों की प्रेरणा आज भी समाज में सुधार और समानता की दिशा में काम करने वाले आंदोलनों के लिए महत्वपूर्ण है। ब्रह्म समाज और आर्य समाज ने हिंदू समाज में सामाजिक और धार्मिक सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों ने हिंदू समाज को आधुनिक और प्रगतिशील बनाने में मदद की।

संदर्भ सूची

पुस्तकें

1. आर्य, रामस्वरूप (1968) : आर्य समाज और राष्ट्रीय जागरण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. चटर्जी, सुशील कुमार (1972) : 'ब्रह्म समाज और भारतीय समाज' घोष प्रकाशन, कलकत्ता।
3. दयानंद, स्वामी (1875) : सत्यार्थ प्रकाश, आर्य प्रकाशन, मुंबई।
4. राम मोहन राय, राजा (1820) : प्रेम सागर, सेरामपुर मिशन प्रेस, कलकत्ता।

लेख और शोध पत्र

1. 'ब्रह्म समाज और आर्य समाज एक तुलनात्मक अध्ययन' भारतीय इतिहास और संस्कृति, खंड 12, संख्या 1, 2015।
2. 'आर्य समाज और राष्ट्रीय जागरण' इंडियन जर्नल ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर, खंड 10, संख्या 2, 2012।
3. 'ब्रह्म समाज और महिला अधिकार' महिला अध्ययन पत्रिका, खंड 5, संख्या 1, 2010।